भारतीय समाज के आइने में बदलती नारी की छवि

डॉ. पूजा गुप्ता

'शोचन्ति जामयो यत्र, विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता, वर्धते तद्धि सर्वदा॥'

अर्थात् जिस स्थान पर नारी का अपमान होता है, वहाँ विनाश होना निश्चित है, और जहाँ उसका सम्मान होता है, वहाँ सदा उन्नति होती है।

सचमुच, समाज को विनाश अथवा प्रगति के पथ पर मोड़ने वाली नारी ही है। किसी भी राष्ट्र का सबसे जीवंत अंग समाज है। समाज की कार्यशील इकाई परिवार है और परिवार की केन्द्रीय धुरी है - नारी। वास्तव में नारी समस्त राष्ट्र की और मानवता की आधारशिला है। समाज-रूपी चक्र को गतिशील रखने में नारी का विशेष महत्व है।

नारी विधाता की सबसे सुन्दर रचना है। नारी के बिना सृष्टि का कोई आधार नहीं है। वह पवित्रता, कोमलता, मधुरता, प्रेम, वात्सल्य आदि दिव्य गुणों की प्रतिमा है। प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद के शब्दों में -

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो'

न कोई स्वार्थ, न कोई छल; नारी समाज के प्रति अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहती है। नारी का मन यही कहता है-

दया माया ममता लो आज
मधुरिमा लो अगाध विश्वास।
हमारा हृदय रत्ननिधि स्वच्छ
तुम्हारे लिए खुला है पास।

परन्तु नारी की छवि ने भारतीय समाज में कई रूप बदले हैं। आधुनिक नारी की व्यक्तित्व को जानने व पहचानने के लिए हमें पूर्व इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी।

भारत में वैदिक काल में स्त्रियों को बहुत अधिक सम्मान दिया जाता था। उन्हें समाज में वही स्थान प्राप्त था, जो पुरुषों को था। उन्हें भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था और वे भी वेदाध्ययन करती थीं। कहीं-कहीं सह-शिक्षा का भी प्रचलन था।

महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में लव-कुश के साथ आत्रेयी के भी शिक्षा ग्रहण करने का उल्लेख मिलता है। यह भी उल्लेख मिलता है कि उन्हें भी 25 वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। वैदिक काल में नारियों का कार्य-क्षेत्र घर से बाहर भी था। इसका प्रमाण मिलता है कि वैदिक साहित्य में नारी को

* *सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, रामजस महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)।*

अध्यापिका, उपाध्याया, आचार्या, ऋषि, मुनि आदि शब्दों से अभिहित किया गया है। सीता, द्रोपदी, मंदोदरी, भारती, अहिल्या, अनुसूया आदि ऐसी महिलाएँ प्राचीन काल में हुईं, जिन्हें पुरुष की तुलना में किसी भी प्रकार से कम नहीं समझा जा सकता।

सामान्यतौर पर नारी की स्थिति परिवार की गतिविधियों तक ही सीमित रहती थी, जबकि पुरुष का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत था। जिस तरह आधुनिक नारी व्यक्तित्व की स्वतंत्रता, स्वावलंबन, शिक्षा और परिणामतः प्रगति की ओर अग्रसर हुई है, वैसा शायद पहले इतिहास में कभी नहीं हुआ।

कहते हैं, रामायण और महाभारत के युग के बाद नारी की स्थिति खराब होती चली गई और उसकी प्रतिष्ठा क्षीण होने लगी। जिस नारी को, इन पंक्तियों से सम्बोधित किया जाता था-

अर्ध सत्य तुम, अर्ध स्वप्न तुम, अर्ध निराशा आशा,
अर्ध अजित-जित, अर्ध तृप्ति तुम, अर्ध अतृप्ति पिपासा;
आधी काया आग तुम्हारी, आधी काया पानी,
अर्धांगिनी नारी! तुम जीवन की आधी परिभाषा।

उसी नारी को नरक के द्वार की संज्ञा दी गई-

'नारी नरकस्य द्वारम्'

शंकराचार्य, कबीर और तुलसीदास जैसे बड़े विद्वानों ने भी नारी की महानता पर प्रश्नचिन्ह अंकित किए। इन लोगों ने नारी को साधना के पथ में बाधा माना। नारी को सर्जनात्मक शक्ति को विध्वंसात्मक शक्ति मान लिया गया। स्त्री-निन्दकों द्वारा नारी को पाप की खान तथा भुजंगिनी के समान भी कहा गया।

'ढ़ोल गंवार शूद्र पशु नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी'

कहकर यह साफ जाहिर कर दिया कि नारी और पशु में कोई अंतर नहीं। यहाँ तक कि नारियों को पशु समान खरीदा व बेचा भी गया। सम्भ्रान्त परिवारों में स्त्रियों को पशु-संपत्ति की तरह संग्रह की वस्तु समझा गया और पण्डितों ने उसे जाति की दृष्टि से शूद्र का दर्जा दिया।

पिछले हजारों वर्षों से पुरुष नारी का शोषण करता रहा है। मध्य युग में नारी को विलासिता का साधन माना जाता था। पुरुष उसे अपने शयनकक्ष का शृंगार मानता था। स्त्री पुरुष की सेविका, भोग्या और अंततः चूल्हा-चौका और बच्चों की परवरिश करने वाली गृहिणी बनकर रह गई। घर की चारदीवारी में कैद होकर नारी को जन्म से मृत्यु तक घुटना पड़ता था। स्त्री की आशा व आकांक्षाओं की पुरुष के लिए कोई महत्ता नहीं थी। उसे शिक्षा के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया था। उसे घर की लक्ष्मण रेखा को पार करने की अनुमति नहीं थी।

परन्तु आधुनिक युग में जब हर चीज एक नवीन रूप धारण कर रही है तो नारी का प्रारूप भी उससे कैसे अछूता रह सकता था? आज के समाज में नारी के सम्बन्ध में भी एक आधुनिक दृष्टिकोण बना है। आधुनिक अर्थात् नए समय के अनुसार, बदलते परिवेश के अनुकुल। आज नारी की स्थिति भी समय के अनुसार बदल रही है, यही उसकी आधुनिकता है।

नारी की पूर्ण स्वायत्तता का आंदोलन लगभग एक शताब्दी पुराना है। भारत में राजा राममोहन राय के प्रादुर्भाव के साथ ही नारी जागरण का संदेश फैलना शुरू हो गया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्तियों ने नारी को समाज में उचित स्थान दिलाने की दिशा में अनेक प्रयत्न किए। फलस्वरूप, नारी से सम्बन्धित अनेक कुप्रथाओं जैसे सती-प्रथा, बाल-विवाह, आदि का अंत हो गया।

नारी की आधुनिकता का प्रादुर्भाव व्यक्तित्व में क्रांति उत्पन्न होने से आया है। इसके साथ ही नारी की आधुनिकता का सम्बन्ध परिवार एवं समाज में उसके स्थान और दायित्व से है। आधुनिक युग में नारी ने अपनी महत्ता को पहचाना। उसने दासता के बन्धनों को तोड़ दिया और स्वतंत्र व्यक्तित्व को अपनाया। आधुनिक नारी ने स्वतंत्रता के साथ-साथ स्वावलंबन का भी पाठ पढ़ा। उसने शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का सुन्दर परिचय दिया है।

शिक्षा के क्षेत्र में वह पुरुषों से कुई कदम आगे निकल चुकी है। वह कला विषयों के साथ-साथ, वाणिज्य और विज्ञान विषयों में भी सफलतापूर्वक शिक्षा ग्रहण कर रही है। नारी प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने के लिए दृढ़ संकल्प है। आधुनिक नारी ने यह सिद्ध कर दिया है कि काम चाहे एक्जीक्यूटिव ऑफिसर का हो या विमान चालक का, स्त्रियाँ उसे सम्पन्न कर सकती हैं। वे सिर्फ ममतामयी जननी और घर का कामकाज देखने वाली गृहिणी मात्र नहीं रह गई हैं।

आधुनिक नारी प्राचीन अंधविश्वासों की बेड़ियों से मुक्त हो गई है। वह भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को अधिक महत्व देती है।

आधुनिकता की आड़ में कुछ नारियाँ स्वतंत्रता और स्वावलंबन के साथ-साथ अभिमान को अपना लेती हैं और नारीत्व को लज्जित कर बैठती हैं। वे स्वयं को पुरुषों से अधिक प्रगतिशील करने की होड़ में नारी व्यक्तित्व की परिभाषा ही बदल देती हैं। उनके लिए नारी-मुक्ति का अर्थ पुरुषों के खिलाफ आंदोलन और अपनी मनमानी चलाना होता है। वे मुक्त होने के क्रम में अपने नारीत्व को खो देती हैं।

ऐसी स्त्रियों को नारी-मुक्ति के नाम पर पुरुषों की नकल या उनके प्रति आंदोलन नहीं करना चाहिए। उन्हें जानना चाहिए कि उनका गौरव इसी बात में है कि वे स्त्रियोचित गुणों से युक्त रहें। ममता, मातृत्व, कोमलता, सुन्दरता, सहजता आदि से युक्त रहकर नारी अपने व्यक्तित्व को आसानी से विकसित कर सकती है।

'आधुनिकता' का यह रूप सतही एवं सीमित है। आधुनिकता का वास्तविक मानदंड इस अपवाद से नहीं अपितु नारी की नई चेतना, आत्मनिर्भरता और अंध-रूढ़ियों से मुक्ति है। अपने अधिकारों व अपनी शक्ति को पहचानने से है। साधारण हस्तशिल्प से लेकर इंजीनियरी तक आज नारी जागरूकता से अपनी योग्यता प्रदर्शित कर रही है। राजनीतिक दृष्टि से भी विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय होकर आधुनिक नारी ने समाज और देश की प्रगति में योगदान दिया है। आज के लोकतंत्र, अर्थतंत्र और समाजतंत्र में नारी की जीवन्त भूमिका साफ नजर आ रही है। यह उसकी आधुनिक दृष्टि का ही परिणाम है।

तात्पर्य यह है कि प्रगति और शिक्षा आदि के क्षेत्र में तो नारी को पूर्ण आधुनिक बनना चाहिए, नए विचारों, नई चेतना को आत्मसात करना चाहिए, किन्तु नाशकारी और समाज-विरोधी आधुनिकता का अन्धानुकरण उचित नहीं।

****